ایاتها ٨ ﴿٩٤﴾ سُوْرَةُ اَلَمْ نَشْرَحْ مَكِّيَّةٌ ١٢ رکوعها ١

सूरए अलम नशरह़ मक्किय्या है, इस में आठ आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۙ﴿۱﴾ وَ وَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیْۤ اَنْقَضَ

क्या हम ने तुम्हारे लिये सीना कुशादा न किया[2] और तुम पर से तुम्हारा वोह बोझ उतार लिया जिस ने तुम्हारी पीठ

ظَهْرَكَ ۙ﴿۳﴾ وَ رَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ؕ﴿۴﴾ فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًا ۙ﴿۵﴾ اِنَّ مَعَ

तोड़ी थी[3] और हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया[4] तो बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है बेशक दुश्वारी

الْعُسْرِ یُسْرًا ؕ﴿۶﴾ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۙ﴿۷﴾ وَ اِلٰی رَبِّكَ فَارْغَبْ ﴿۸﴾ ع ١٩/٨/١

के साथ और आसानी है[5] तो जब तुम नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो दुआ़ में[6] मेह़नत करो[7] और अपने रब ही की त़रफ़ रग़बत करो[8]

ایاتها ٨ ﴿٩٥﴾ سُوْرَةُ التِّيْنِ مَكِّيَّةٌ ٢٨ رکوعها ١

सूरए तीन मक्किय्या है, इस में आठ आयतें और एक रुकूअ़ है

फ़रमाई और वोह भी जिन का हुज़ूर से वा'दा फ़रमाया। ने'मतों के ज़िक्र का इस लिये हुक्म फ़रमाया कि ने'मत का बयान करना शुक्र गुज़ारी है। **1 :** ''सूरए अलम नशरह़'' मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, आठ आयतें और सत्ताईस कलिमे, एक सो तीन ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी हम ने आप के सीने को कुशादा और वसीअ़ किया हिदायतो मा'रिफ़त और मौइज़तो नुबुव्वत और इल्मो ह़िक्मत के लिये, यहां तक कि आ़लमे ग़ैबो शहादत उस की वुस्अ़त में समा गए और अ़लाइक़े जिस्मानिय्या, अन्वारे रूह़ानिय्या के लिये मानेअ़ न हो सके और उ़लूमे लदुन्निय्या व हुक्मे इलाहिय्यह व मआ़रिफ़े रब्बानिय्या व ह़क़ाइक़े रह़मानिय्या सीनए पाक में जल्वा नुमा हुए। और ज़ाहिरी शर्हे सद्र भी बार बार हुवा, इब्तिदाए उ़म्र शरीफ़ में और इब्तिदाए नुज़ूले वह़्य के वक़्त और शबे मे'राज जैसा कि अह़ादीस में आया है, इस की शक्ल येह थी कि जिब्रीले अमीन ने सीनए पाक को चाक कर के क़ल्बे मुबारक निकाला और ज़र्रीं त़श्त में आबे ज़मज़म से ग़ुस्ल दिया और नूर व ह़िक्मत से भर कर उस को उस की जगह रख दिया। **3 :** इस बोझ से मुराद या वोह ग़म है जो आप को कुफ़्फ़ार के ईमान न लाने से रहता था या उम्मत के गुनाहों का ग़म जिस में क़ल्बे मुबारक मश्ग़ूल रहता था, मुराद येह है कि हम ने आप को मक़्बूलुश्शफ़ाअ़त कर के वोह बारे ग़म दूर कर दिया। **4 :** ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्रील से इस आयत को दरयाफ़्त फ़रमाया तो उन्हों ने कहा : **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि आप के ज़िक्र की बुलन्दी येह है कि जब मेरा ज़िक्र किया जाए मेरे साथ आप का भी ज़िक्र किया जाए। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि मुराद इस से येह है कि अज़ान में, तक्बीर में, तशह्हुद में, मिम्बरों पर, ख़ुत़्बों में। तो अगर कोई **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत करे हर बात में उस की तस्दीक़ करे और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत की गवाही न दे तो येह सब बेकार, वोह काफ़िर ही रहेगा। क़तादा ने कहा कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप का ज़िक्र दुन्या व आख़िरत में बुलन्द किया, हर ख़त़ीब, हर तशह्हुद पढ़ने वाला, اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ के साथ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ पुकारता है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि आप के ज़िक्र की बुलन्दी येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अम्बिया से आप पर ईमान लाने का अ़ह्द लिया। **5 :** या'नी जो शिद्दत व सख़्ती कि आप कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में बरदाश्त फ़रमा रहे हैं इस के साथ ही आसानी है कि हम आप को इन पर ग़लबा अ़त़ा फ़रमाएंगे। **6 :** या'नी आख़िरत की **7 :** कि दुआ़ बा'दे नमाज़ मक़्बूल होती है, इस दुआ़ से मुराद आख़िरे नमाज़ की वोह दुआ़ है जो नमाज़ के अन्दर हो या वोह दुआ़ जो सलाम के बा'द हो, इस में इख़्तिलाफ़ है। **8 :** उसी के फ़ज़्ल के त़ालिब रहो और उसी पर तवक्कुल करो।

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ﴿١﴾ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ﴿٢﴾ وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ﴿٣﴾

इन्जीर की क़सम और ज़ैतून[2] और तूरे सीना[3] और इस अमान वाले शह्र की[4]

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ﴿٤﴾ ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ

बेशक हम ने आदमी को अच्छी सूरत पर बनाया फिर उसे हर नीची से नीची सी हालत

سٰفِلِيْنَ ﴿٥﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ

की तरफ़ फेर दिया[5] मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि उन्हें

مَمْنُوْنٍ ﴿٦﴾ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ﴿٧﴾ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ

बेह़द सवाब है[6] तो अब[7] क्या चीज़ तुझे इन्साफ़ के झुटलाने पर बाइस है[8] क्या अल्लाह सब ह़ाकिमों से बढ़ कर

الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨﴾

ह़ाकिम नहीं

ركوعها ١ | ٩٦ سُوْرَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ ١ | اٰياتها ١٩

सूरए अ़लक़ मक्किय्या है, इस में उन्नीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

1 : "सूरए वत्तीन" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, आठ आयतें, चोंतीस कलिमे, एक सो पांच ह़र्फ़ हैं। 2 : इन्जीर निहायत उ़म्दा मेवा है जिस में फुज़्ला नहीं, सरीउ़ल हज़्म, कसीरुन्नफ़्अ़, मुलय्यिन, मुह़ल्लिल, दाफ़ेए़ रेग, मुफ़त्तिहे सुद्दए जिगर, बदन का फ़र्बा करने वाला, बल्ग़म को छांटने वाला। ज़ैतून एक मुबारक दरख़्त है इस का तेल रोशनी के काम में भी लाया जाता है और बजाए सालन के भी खाया जाता है, येह वस्फ़ दुन्या के किसी तेल में नहीं, इस का दरख़्त ख़ुश्क पहाड़ों में पैदा होता है जिन में दुहनिय्यत (चिक्नाहट) का नामो निशान नहीं, बिग़ैर ख़िदमत के परवरिश पाता है, हज़ारों बरस रहता है, इन चीज़ों में क़ुदरते इलाही के आसार ज़ाहिर हैं। 3 : येह वोह पहाड़ है जिस पर अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया और "सीना" उस जगह का नाम है जहां येह पहाड़ वाक़ेअ़ है या ब मा'ना ख़ुश मन्ज़र के है जहां कसरत से फलदार दरख़्त हों। 4 : या'नी मक्कए मुकर्रमा की 5 : या'नी बुढ़ापे की त़रफ़ जब कि बदन ज़ईफ़, आ'ज़ा नाकारा, अ़क़्ल नाक़िस, पुश्त ख़म, बाल सफ़ेद हो जाते हैं, जिल्द में झुर्रियां पड़ जाती हैं, अपने ज़रूरिय्यात अन्जाम देने में मजबूर हो जाता है या येह मा'ना हैं कि जब उस ने अच्छी शक्ल व सूरत की शुक्र गुज़ारी न की और ना फ़रमानी पर जमा रहा और ईमान न लाया तो जहन्नम के अस्फ़ल तरीन दरकात (सब से नीचे वाले त़ब्क़ों) को हम ने उस का ठिकाना कर दिया। 6 : अगर्चे ज़ो'फ़े पीरी के बाइस वोह जवानी की त़रह़ कसीर त़ाअ़तें बजा न ला सकें और उन के अ़मल कम हो जाएं लेकिन करमे इलाही से उन्हें वोही अज्र मिलेगा जो शबाब और क़ुव्वत के ज़माने में अ़मल करने से मिलता था और इतने ही अ़मल उन के लिखे जाएंगे। 7 : इस बयाने क़ातेअ़ व बुरहाने सातेअ़ के बा'द ऐ काफ़िर ! 8 : और तू अल्लाह तआ़ला की येह क़ुदरतें देखने के बा वुजूद क्यूं बअ़्स व ह़िसाब व जज़ा का इन्कार करता है। 1 : "सूरए इक़्रअ"

www.dawateislami.net